कृष्ण द्वादशपदी

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज

१

नीलमणि तनु लखि गइ बलिहार।

त्रिभुवन सुन्दर कामदेव अरु, रति है उसकी नार।
उनते अगनित गुनित मनोहर, हैं सुन्दर सरकार।
उनकी सुंदरता उनके ही, मन को मोहनहार।
उनकी चिन्मय तनु लखि ज्ञानिहुँ, मानत मुक्तिहिं खार।
शिव, शुक, जनक, सनक तनु छवि लखि, देत समाधि बिसार।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, वाणी, लखि नहिं पतिव्रतधार।
उनके रोम रोम ते संतत, बह ब्रज रस की धार।
कह 'कृपालु' उन तनु रस चाखत, भल वृषभानु दुलार।

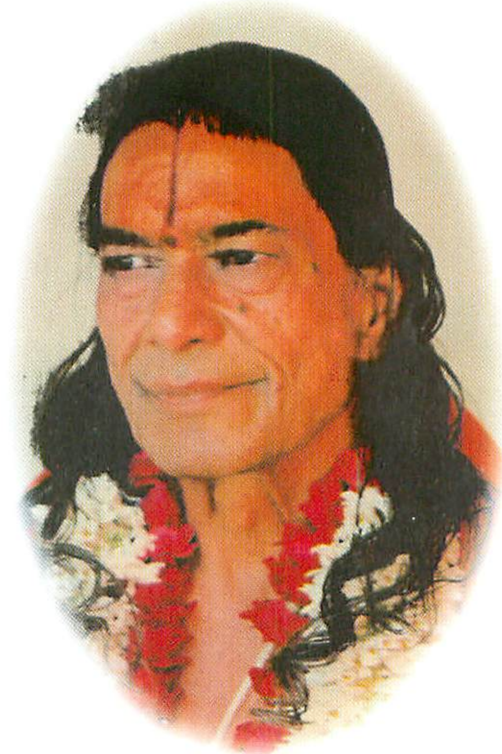

भावार्थः-एक सखी किसी दूसरी सखी से कहती है- हे सखी! श्यामसुन्दर के दिव्य शरीर के सौन्दर्य का दर्शन कर मैंने अपने तन मन, प्राण न्यौछावर कर दिये। त्रिभुवन में सबसे सुन्दर कामदेव और उसकी पत्नी रति हैं। उन दोनों से असंख्य गुना मनोहर श्यामसुन्दर हैं। श्यामसुन्दर का सौन्दर्य उनके ही मन को मोहित कर लेता है। उनके चिदानन्दमय शरीर का दर्शन कर ज्ञानी जन मुक्ति के सुख को खारा समझते हैं। शिव, शुक, जनक एवं सनकादिक नंदनंदन के शरीर की शोभा को देखकर समाधि-सुख को विस्मृत कर देते हैं। पार्वती, लक्ष्मी, सावित्री एवं सरस्वती श्री कृष्ण की सुन्दर छवि को निहार कर पातिव्रत-धर्म से विचलित हो जाती हैं नीलमणि के रोम रोम से निरन्तर ब्रज-रस की धारा प्रवाहित होती रहती है।

पद के रचयिता के अनुसार श्री कृष्ण के शारीरिक-माधुर्य का आस्वादन भली प्रकार से श्री राधा रानी ही करती हैं।

२

अनुपम नीलो तनु सरकार।
कोउ कह इन्द्रनील मणि सम कोउ, नील जलद अनुहार।
कोउ कह नील कमल सम नीलो, तनु छवि नन्द कुमार।
इन तीनों का पृथक पृथक है, गुण बुध करहु विचार।
याते इन तीनों के गुण का, मिश्रण करु तैयार।
पुनि उसमें मिश्रण करु चिन्मय, प्रेम सुधा रससार।
कह 'कृपालु' तनु उपमा अस जस, तनु वृषभानु दुलार।

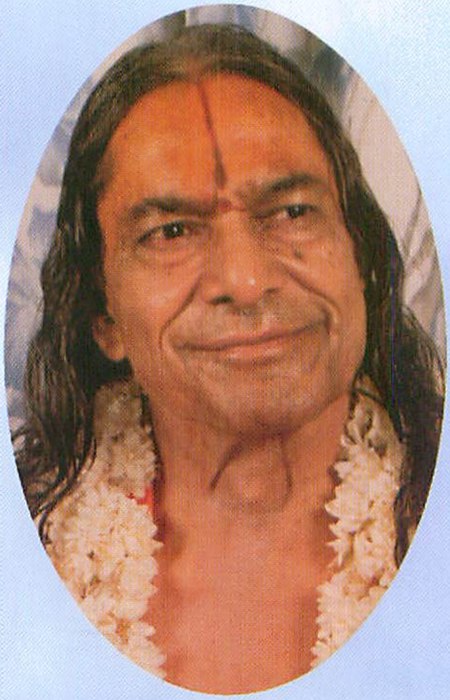

भावार्थः-भक्तों के आराध्य नन्दनन्दन का नीले रंग का देह अनुपमेय है। किसी भक्त ने उनके नीले रंग को इन्द्र नीलमणि एवं किसी ने नीले मेघ के समान बताया है। किसी रसिक ने कहा कि नंदनन्दन का शरीर नील कमल के समान छविमान है। इन्द्र नीलमणि, मेघ एवं नीलकमल इन तीनों में पृथक पृथक गुण हैं। इन्द्र नीलमणि में कान्ति है, स्निग्धता है, नीला रंग है। मेघ गम्भीर होता है, तापनाशक होता है, सरस होता है, नीला भी है। नीलकमल नीला है, शीतल है, कोमल है, सुगन्धित है। इन तीनों के समस्त गुणों का एक मिश्रण तैयार कर उस मिश्रण में दिव्य प्रेमामृत के सार को भी मिला दिया जाय तब कुछ कुछ उपमा नंदनन्दन के नीलवर्ण की दी जा सकती है।

'कृपालु' कहते हैं-वस्तुतः श्री कृष्ण के चिन्मय वपु की तुलना श्री राधा के दिव्य शरीर से ही की जा सकती है।

३

श्याम मुख छवि लखि गइ बलिहार।

लखतहिं बनत सखी मुख छवि जब, हँसत श्याम सरकार।
दाडिम बीज सरिस दशनन दुति, दमकनि श्वेत निहार।
सो दुति अधर अरुणिमा ते मिलि, श्वेतारुण रँगधार।
पुनि श्वेतारुण रँग में तनु रँग, नीलो मिलि इक सार।
लखि 'कृपालु' मुख रंग त्रिवेणी, विधि हरि हर मनहार।

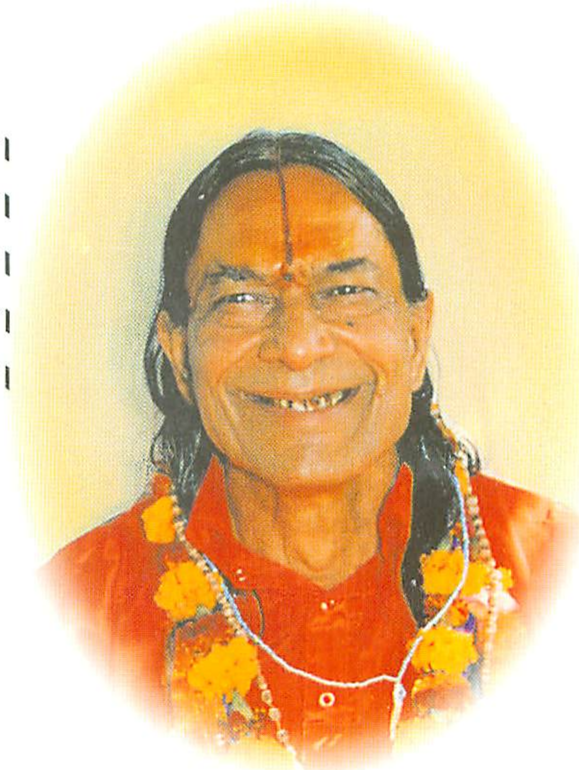

भावार्थः-एक सखी अपनी अन्य सखी से कहती है-श्यामसुन्दर की मुख-छवि का दर्शन कर मैंने अपना सर्वस्व, न्यौछावर कर दिया श्यामसुंदर जब हँसते हैं-तब उनके मुख की शोभा देखते ही बनती है। अनार के बीजों के समान उनके उज्ज्वल दांतों की दमक है। दांतों की श्वेत कान्ति जब अधरों की लालिमा से मिल जाती है तब वह श्वेतारुण प्रतीत होती है। उस श्वेतारुण वर्ण में जब मुख का नीला रंग भी मिल जाता है तब तो मुख-छवि अवर्णनीय हो जाती है। इस प्रकार श्रीकृष्ण के मुख की कान्ति की त्रिवेणी (दांतों का श्वेत वर्ण गंगा, अरुण अधरों का लाल रंग सरस्वती एवं मुख की नील वर्ण यमुना) का दर्शन कर ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव, ने अपना मन उनके चरणों में समर्पित कर दिया।

४

श्याम सिर मुकुट लटक बलिहार।

चिन्मय नाना मणिन अलंकृत, कनक मुकुट सिरधार।
रंग बिरंगे मणिन रंग मिलि, झिलमिल करत लिलार।
रंग बिरंगी मोतिन लर पुनि, लिपटी मुकुट निहार।
चमचमात सिर मुकुट मध्य कर, पंख मयूर विहार।
मुख पर परत मुकुटमणि मुक्तन, रंग चमक छविदार।
लखि 'कृपालु' सिर मुकुट करोरन, इन्द्रधनुष दउँ वार।

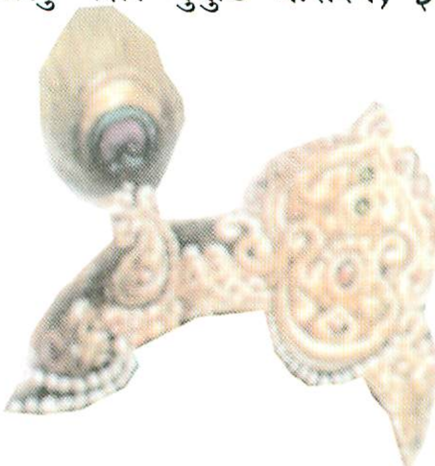

भावार्थः-संत कवि कहते हैं- अपने आराध्य श्यामसुन्दर के मस्तक पर धारण किये हुए अद्भुत मुकुट की लटक पर मैंने अपना मन, प्राण सब कुछ वार दिया। श्यामसुन्दर के आभूषण उनकी भाँति ही चेतन हैं। दिव्य मणियों से जटित र्स्वण के मुकुट की शोभा विचित्र है। विविध रंग के मणियों का रंग परस्पर मिलकर मस्तक को दैदीप्यमान कर रहा है। उस मणि-मुकुट मे ंअनेक रंगों की मोतियों की लड़ लिपट रही है। मस्तक के चमकते हुए मुकुट के मध्य में मयूर पंख लहरा रहा है। स्वर्ण के मुकुट की मणियों एवं मोतियों का विविध रंग बिरंगा प्रकाश मुख पर पड़ रहा है। भक्त कवि नंदनंदन के शीश के मुकुट पर करोड़ों इन्द्रधनुषों की शोभा न्यौछावर करते हैं।

श्याम जु के गोल कपोल निहार।
कुण्डल स्वर्ण कर्ण बहुरंगी, रतन जटित बलिहार।
रंग बिरंगी रत्नन दमकनि, गोल कपोलनि झार।
ऊपर ते करि होड़ मुकुट हूँ, करत रंग बौछार।
उत मुक्ताहल हूँ निज दुति लै, चमक कपोल मझार।
कह 'कृपालु' इक और देह दुति, दमकति इमि दुति चार।

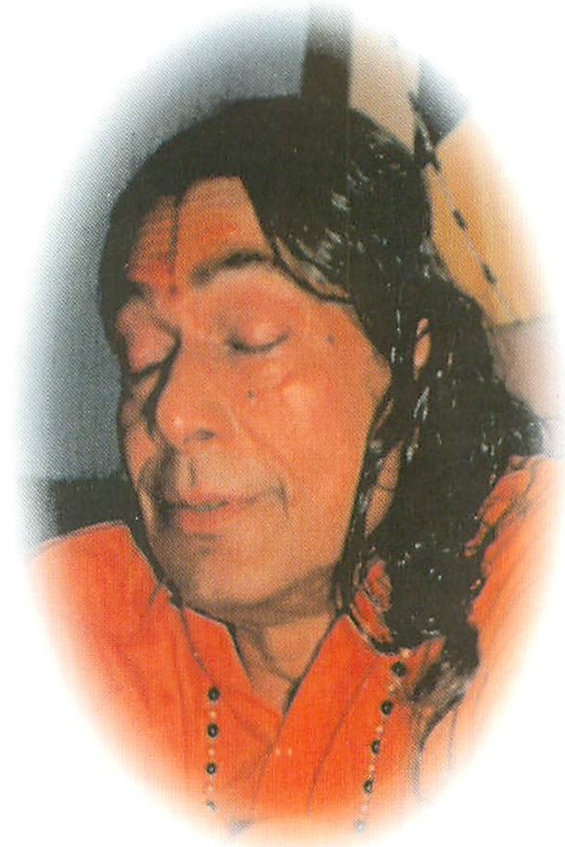

भावार्थः–एक सखी दूसरी सखी से कहती है–अरी सखी! तनिक श्यामसुंदर के गोल कपोलों की छवि का दर्शन कर। नंदनंदन के कानों में अनेक प्रकार के रंगों के रत्नों के जड़ाऊ कुंडल शोभा पा रहे हैं। कुंडल के रंग बिरंगे रत्न चमचमाते हुए कृष्ण के गोल कपोलों पर प्रकाश की वर्षा सी कर रहे हैं। श्यामसुन्दर के मस्तक का मुकुट मानों कुंडलों से स्पर्धा करता हुआ अपने इन्द्रधनुषी रंगों की बौछार कपोलों पर कर रहा है। कृष्ण की नासिका की बुलाक का मोती अपने श्वेत प्रकाश से कपोलों की द्युति को अद्भुत बना रहा है। इधर गोपाल के मुख की नीले रंग की चमक भी कपोलों पर पड़ रही है। इस प्रकार कपोलों पर कुंडल, मुकुट, बुलाक एवं मुख की कान्ति सब मिलकर चारों परस्पर स्पर्धा करती हुई सी प्रतीत हो रही हैं।

६

श्याम को भाल विशाल निहार।

कस्तूरी को तिलक भाल पर, शोभित छवि छविदार।
पुनि बहुरंगी मुकुट चमक ते, चमकत नील लिलार।
इनमें नीलो भाल चमक मिलि, अद्भुत छवि बलिहार।
तिलक, मुकुट अरु भाल चमक दुति, को ताण्डव अनुहार।
सब 'कृपालु' शृंगार अलौकिक, चिदानन्दमय धार।

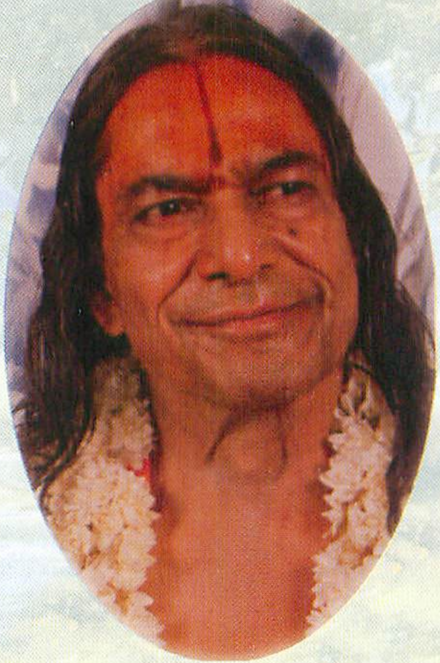

भावार्थः-किसी सखी ने अपनी अभिन्न सखी को श्रीकृष्ण के विशाल भाल को दिखाते हुए कहा-अरी सखी! देख तो सही-कृष्ण का मस्तक कितनी अपूर्व शोभा को प्राप्त हो रहा है। कस्तूरी का तिलक मस्तक की श्रीवृद्धि कर रहा है। श्याम का नील वर्ण का मस्तक मुकुट के विविध रंगों के रत्नों की आभा से प्रकाशित हो उठा है। मस्तक के नील वर्ण की द्युति ने कुंडलों की दमक से मिलकर एक विचित्र शोभा प्राप्त की है। श्याम के मस्तक पर कस्तूरी के तिलक की कृष्ण चमक, मुकुट की इन्द्रधनुषी आभा एवं मस्तक की स्वयं की नील वर्ण की कान्ति सम्मिलित होकर ताण्डव-नर्तन सा कर रही हैं। सन्त कहते हैं-कृष्ण का श्रृंगार उनके समान ही अलौकिक चिदानंदमय है।

७

नीलमणि नैनन पर बलिहार।

इन नैनन रस जानति-नीके, श्री वृषभानु दुलार।
तीन रंग श्वेतिमा अरुणिमा, अरु कालिमा निहार।
डूब न जाय रसिक नैनन रस, याते पलक विहार।
पलकनि ऊपर अटपट नटखट, भृकुटि काम धनु धार।
जब तिरछे नैनन बानन सों, मारत नंदकुमार।
तब 'कृपालु' शिव बने शिवानी, कह 'हा प्राणाधार'!

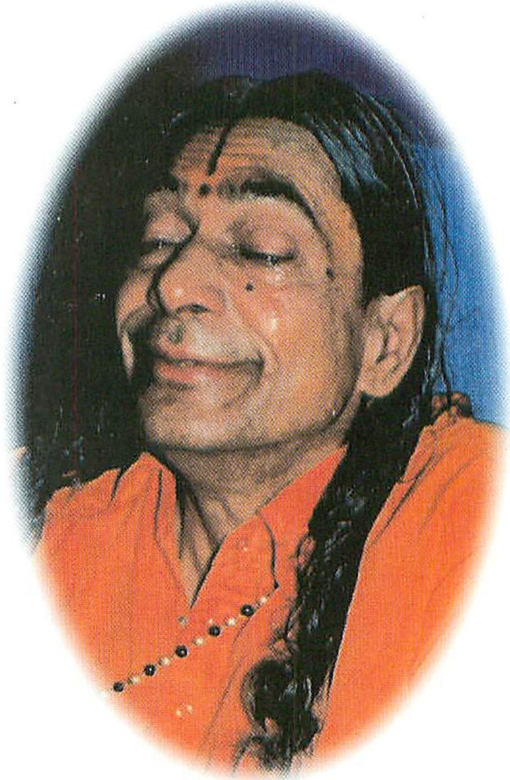

भावार्थः-रसिक संत निज इष्ट के रसीले नेत्रों पर बलिहार जाते हुए कहते हैं–इन नेत्रों के अद्भुत रस का अनुभव एकमात्र वृषभानुनन्दिनी ही करती हैं। कृष्ण के नेत्र तीन प्रकार के रंगों से युक्त हैं। नेत्रों का मध्य भाग श्वेत है। नेत्रों के कोर (प्रान्त भाग) अरुण हैं एवं श्याम–पुत्तलिका कृष्ण वर्ण की है। इन नेत्रों का दर्शन कर रसिकों का मन कहीं अगाध रस–सिंधु में डूब न जाय, इस कारण नेत्रों के ऊपर पलक रचना हुई है। ये पलकें बार बार उठती हैं, गिरती हैं। कभी नेत्रों का दर्शन करा देती हैं, कभी दृष्टा की दृष्टि से बचाने के लिये नेत्रों के रस को ढांप लेती हैं। पलकों के ऊपर टेढ़ी भृकुटियां कामदेव के धनुष का रूप धारण किये हैं। जब श्यामसुंदर अपनी चंचल भृकुटि रूपी धनुष पर तिरछी चितवन का बाण रखकर लक्ष्य पर चलाते हैं, उस समय उनके कटाक्षपात से घायल हुए शिव भी शिवानी बने हा प्राणधन! कह मूर्छित हो जाते हैं।

८

श्याम के कंधे सुघर निहार।
सुंदर कंध सुडौल सिंहहूँ, कंध लजावन हार।
कंधों के नीचे जनु जलधर, नीलकण्ठ छविदार।
उसमें चमचम कौस्तुभ मणि की, चमक चमक बलिहार।
पुनि गर रंग बिरंगे रत्नन, मणि मुक्तन को हार।
कोउ कंठ कोउ वक्ष कोउ कटि, लौं कर हार विहार।
पुनि हारन संग गुंज माल दुति, इन्द्र धनुष रँग धार।
लहि 'कृपालु' वनमाल सुगंधनि, शंभु समाधि बिसार।

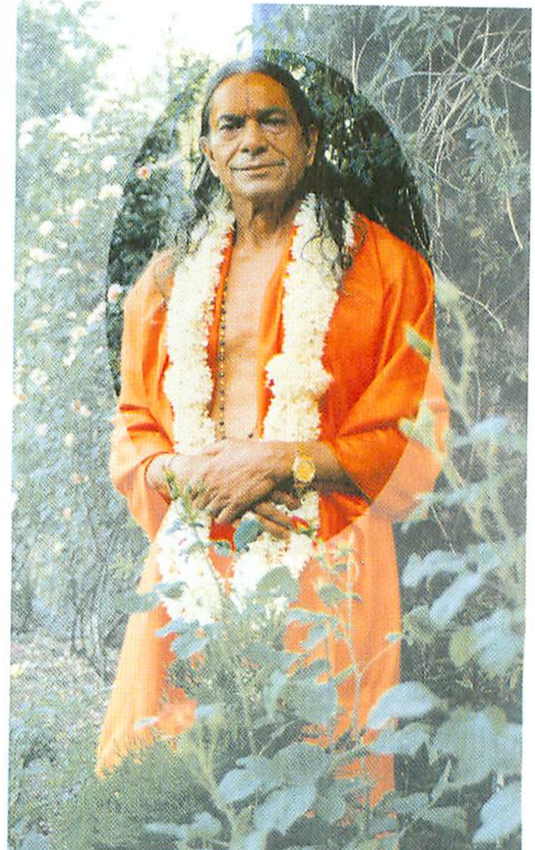

भावार्थः-श्यामसुंदर के सुडौल स्कंध विचित्र शोभा धारण किये हैं। ये ऊंचे कंधे सिंह के कंधों को भी लज्जित कर रहे हैं। युगल स्कन्धों के निम्न भाग में नीले बादल के समान नीला कण्ठ सुशोभित हो रहा है। नीले कंठ में चमचमाते हुए कौस्तुभमणि की चमक को देखकर स्वयं चमक भी बलिहार जाती है। कंठ में रंगबिरंगे रत्नों, मणियों एवं मुक्ताओं के हार हैं। कोई हार केवल कण्ठ तक ही है, कोई वक्षस्थल पर विहार करता है, तो कोई कटि-पर्यन्त शोभित है। कण्ठ के विविध प्रकार के हारों के साथ साथ गुंजमाला की द्युति इन्द्रधनुष का रंग धारण कर रही है। कण्ठ में पांच प्रकार के पुष्पों (पारिजात, कुंद, मन्दार, तुलसी आदि) की वनमाला की सुगन्ध ने तो भगवान शिव की समाधि तोड़ दी।

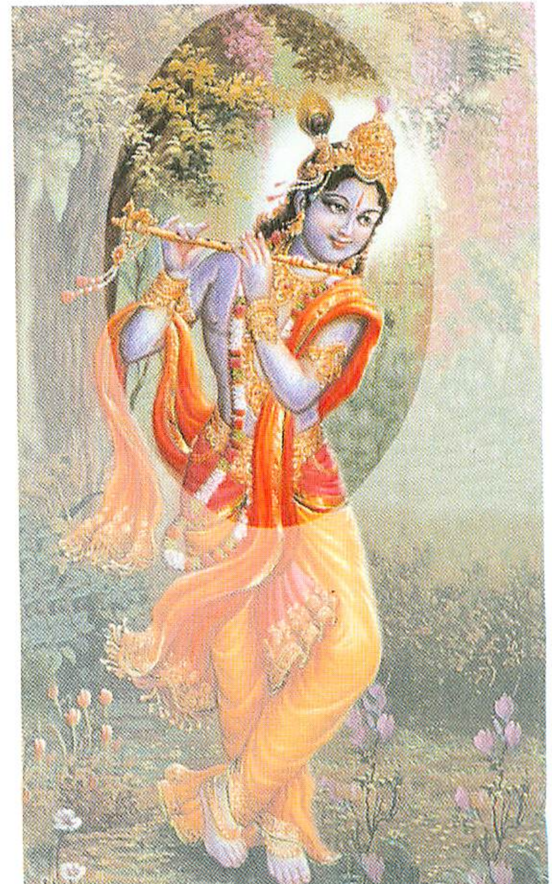

९

नीलमणि नीली भुजन निहार।
कुमकुम मिश्रित हरि चन्दन को, लेप सुगंधि अपार।
रतन जटित कनकन कंकन की, दुति दामिनि अनुहार।
बाजूबंद पीतिमा नीली, तनु दुति मिलि बलिहार।
करतल लाल कमल कोमल भल, मोहिनि मुरलिहुँ धार।
कह 'कृपालु' नंदलाल द्विभुज सों, ब्रजरसिकन को प्यार।

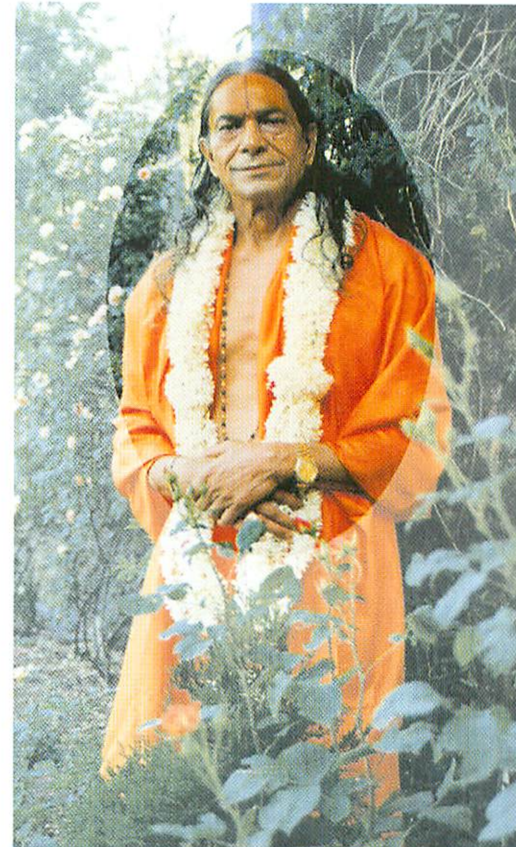

भावार्थ:–रसिक संकेत करते हैं–

नीलमणि की नीली भुजाओं को तो देखो–इन भुजाओं पर कुमकुम मिश्रित हरि चंदन का सुगंधित लेप किया गया है। रत्नों से जड़े हुए स्वर्ण–कंकणों का प्रकाश बिजली के समान ही प्रतीत होता है। भुजाओं के स्वर्ण–निर्मित पीत वर्ण के बाजूबंद नीलवर्ण की भुजाओं से मिलकर अनोखी कान्ति को प्राप्त हो रहे हैं। कृष्ण के कोमल कर–तल लाल कमलों की भांति अत्यन्त रक्तिम वर्ण हैं। नंदलाल ने अपने कोमल करों में मोहिनी मुरली को धारण किया है। ब्रज–रसिक इन द्विभुजधारी श्याम की ही आराधना करते हैं।

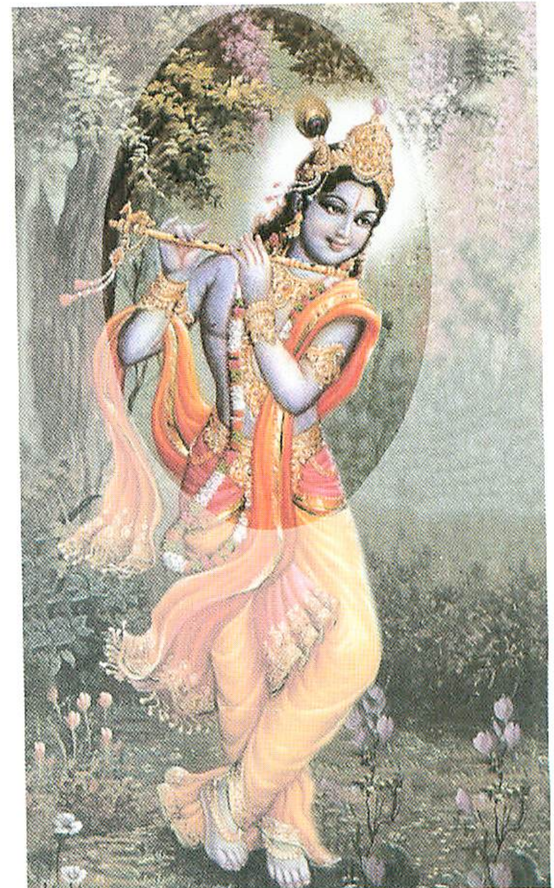

१०

नीलमणि वक्षःस्थल बलिहार ।

वक्ष दाहिने बायें हैं दो, रोम राजि रिझवार।
दक्षिण रोम राजि को सब बुध, जन श्री वत्स पुकार।
बायें रोम राजि लक्ष्मी को, नित्य निवास निहार।
इन दोउन के मध्य विप्रवर, भृगु मुनि के पद धार।
कटि तट कछी काछनी छवि लखि, सनक समाधि बिसार।
पुनि कमनीय कनक किंकिनि कटि, रुन झुन धुन विस्तार।
मिलि 'कृपालु' भूषन रत्नन दुति, तनु दुति दमक अपार।

भावार्थः-कृष्ण के वक्ष:स्थल की अद्भुत शोभा का वर्णन करते हुए रसिक संत कहते हैं- मैं नंदनंदन के वक्षस्थल की विचित्र छवि पर बलिहार जाता हूं। अत्यन्त सौन्दर्य शाली वक्ष:स्थल के दाहिने एवं बाम भाग में दो रोमावली शोभित हैं। दांयें भाग की रोमावली को सभी श्रीवत्स रूप में जानते हैं। वाम भाग की रोमावली को लक्ष्मी देवी का नित्य निवास स्थल माना गया है। इन दोनों रोमावलियों के मध्य ब्राह्मण-श्रेष्ठ भृगु मुनि के चरण-चिन्ह सुशोभित हैं। कटि-प्रान्त में सुघरता से बांधी गई दिव्य वस्त्र की काछनी को देखकर तो सनकादि अपनी समाधि को ही विस्मृत कर बैठे। स्वर्ण-मेखला की रुनझुन ध्वनि कटि-प्रान्त की कमनीयता का विस्तार कर रही है। नंदनंदन के दिव्य आभूषणों के रत्नों की द्युति से उनके शरीर की दमक द्विगुणित हो उठी है।

नीलमणि चरण कमल बलिहार ।

चिन्मय नीले पद पंकज पर, पीताम्बर छविदार।
कंधों ते पग लौं पीताम्बर, लटक दुकूल निहार।
रतन जटित कनकन पग पायल, की रुन झुन झनकार।
कोमल ते कोमल दोउ पग नहिं, उपमा जगत मझार।
लखि दस नख मणि चन्द्र चन्द्रकहिं, शंभु समाधि बिसार।
चरण कमल तल चक्र आदि के, पंद्रह चिह्नि धार।
कह 'कृपालु' इन पद चिह्नन को, रसिकहिं देखन हार।

भावार्थः-श्यामसुंदर के कोमल चरण-कमलों पर बलिहार जाते हुए संत कहते हैं-नंदनंदन के दिव्य नील वर्ण के पद-कमलों पर पीताम्बर शोभा पा रहा है। यह पीत दुकूल कंधों से लेकर चरणों तक लटक रहा है। विविध रत्नों से जड़ी हुई स्वर्ण की पायल चरणों में रुनझुन शब्द की झनकार उत्पन्न कर रही है। इन युगल, चरणों की कोमलता के लिये संसार में अन्य कोई उपमा नहीं है। ये चरण कोमलता से भी कोमल हैं। युगल चरणों के दस नख मणियों की चन्द्रिका के प्रकाश ने शिव को समाधि से जाग्रत कर दिया। चरण-तलों में चक्र, वज्र, अंकुश, जौ आदि के पन्द्रह दिव्य चिन्ह हैं। इन चरण-चिन्हों का दर्शन रसिक-जन अपनी दिव्य-दृष्टि से भाव-समाधि में करते हैं।

श्याम में आठ सुगंधि बताय।
प्रथम सुगंधि दिव्य मुख की जो, सनक समाधि भुलाय।
दूजी लेपित तनु हरि चंदन, की सुगंधि फैलाय।
हरि चंदन कुंकुम मिश्रित हूँ, एक सुगंधि कहाय।
एक सुगंधि एक कुंकुम की, रसिक जनन बतलाय।
बनमाला में गुथी तुलसिका, की सुगंधि इक आय।
अन्य वन्य फूलों की माला, इक सुगंधि कहलाय।
मुख सुगंधि सों मिलि सुगंधि सब, इक सुगंधि बनि जाय।
यह 'कृपालु' सौगंध्य अष्ट नित, श्यामा में भी भाय।

भावार्थः-श्यामसुंदर के दिव्य शरीर में से आठ प्रकार की सुगंधियां निःसृत होती रहती हैं। प्रथम प्रकार की सुगंधि तो उनके मुख-कमल की ही है, जिसे ग्रहण कर सनकादि अपनी समाधि भूल जाते हैं। दूसरी सुगंधि हरिचंदन की है, जिसका लेप श्रीकृष्ण के शरीर पर किया गया है। एक सुगंधि हरि चंदन मिश्रित कुमकुम की है। एक सुगंधि केवल कुमकुम की है। एक सुगंधि वनमाला में गूंथी हुई तुलसी की है। कण्ठ में धारण की हुई वन्य पुष्पों की माला की भी एक सुगंधि है। ये समस्त सुगंधियां मुख की सुगंधि से मिलकर एक सुगंधि और बन जाती है। ये अष्ट सुगंधियां श्रीराधा में भी नित्य निवास करती हैं।